गांधी-मार्ग

मार्च-अप्रैल 2026

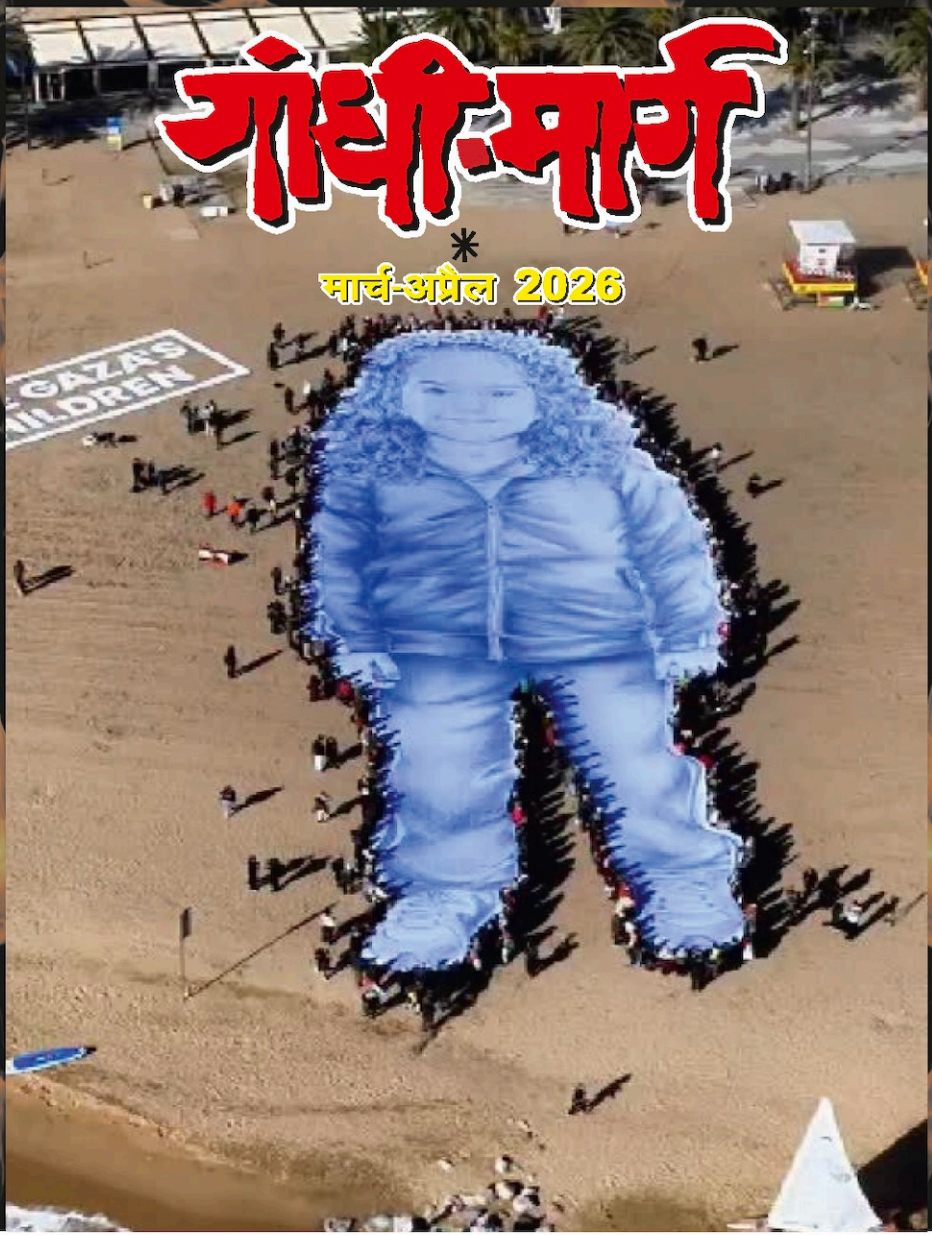

युद्ध...युद्ध...युद्ध... और गांधी

- महात्मा गांधी
- जैनेंद्र कुमार
- अज्ञेय
- बिल क्लिंटन
- सुंदरलाल बहुगुणा

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 68, अंक 2, मार्च-अप्रैल 2026

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. **शुरू में...** 3
2. **युद्ध...युद्ध...युद्ध... और गांधी** 4
3. **दस्तावेज** : एक निर्णायक बयान 23
4. **आह्वान** : हम अपने लोकतंत्र की जड़ें... बिल क्लिंटन 29
5. **चुनौती** : युद्ध और फौज से आगे की दुनिया जैनेंद्र कुमार 32
6. **विकल्प** : युद्ध के बिना शेखर गुप्ता 38
7. **बदलाव** : भाषा बदल रही है! प्रमोद रंजन 41
8. **झरोखा** : साहित्य का सच अज्ञेय 43
9. **जीवन-सफर** : मेरे पथ में न विराम रहा... सुंदर लाल बहुगुणा 49
10. **विदा** 55
11. **टिप्पणियां** 58
12. **पत्र** 63

आवरण : रेत में दमकती इस 5 साल की फलस्तीनी बच्ची का नाम था हिंद रामी इयान रजाब. हिंद अरबी शब्द है जिसका एक मतलब ताकत का पुंज भी होता है. हिंद का परिवार जब गजा से निकल भागने की कोशिश कर रहा था तभी इस्राइली बमबारी में वे सभी मारे गए. बचे बस हिंद और उसका भाई! आसमान से आग बरसाती मिसाइलों व फूटते बमों से घिरे दोनों बच्चों ने देखा कि सामने निशाना साधता एक टैंक खड़ा है. फोन से उन्होंने बचाव दल को बताया भी लेकिन बचाव विनाश की गति से धीमा साबित हुआ. फोन पर उसकी आखिरी आवाज जो उसकी मां ने सुनी वह इतनी ही थी : ''मां, मैं बेहद डरी हुई हूं... तुम जल्दी आओ!''... तभी टैंक की तोप ने उसे खामोश कर दिया... बाद में एक रोज मां ने हिंद का हजार मीटर लंबा बैनर गजा की रेत पर फैला दिया जिसके किनारे-किनारे आ खड़े हुए सैकड़ों लोग... जैसे हिंद एक बार फिर जीवित हो उठी!... युद्ध का ऐसा प्रतिकार ही जीवन को मौत से बड़ा बनाता है... अंक-सज्जा की है **मुकेश गेरा** ने.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

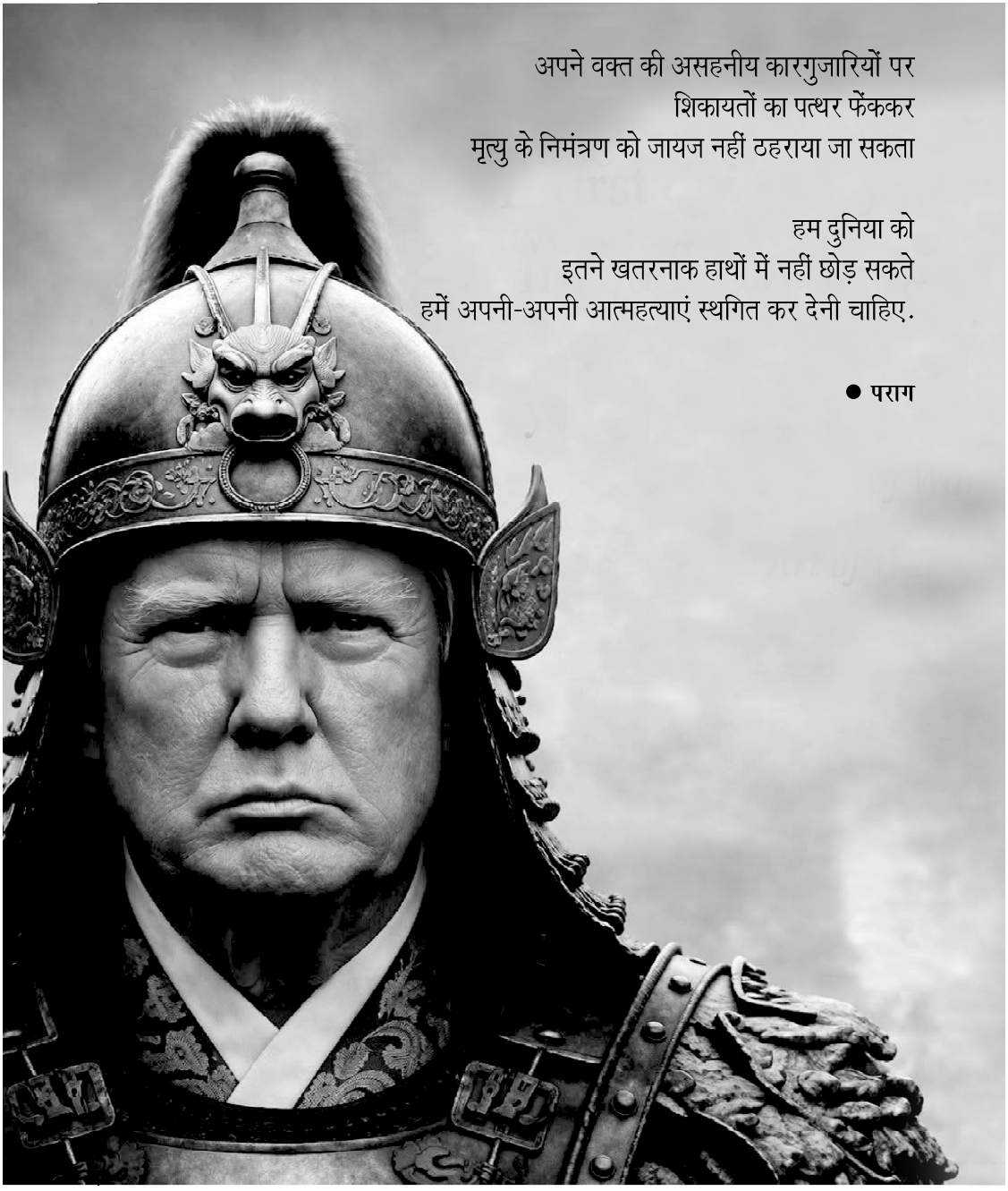

अपने वक्त की असहनीय कारगुजारियों पर
शिकायतों का पत्थर फेंककर
मृत्यु के निमंत्रण को जायज नहीं ठहराया जा सकता

हम दुनिया को
इतने खतरनाक हाथों में नहीं छोड़ सकते
हमें अपनी-अपनी आत्महत्याएं स्थगित कर देनी चाहिए.

● **पराग**

युद्ध परिदृश्य

एक ही रात में - 7 अप्रैल 2026 - हजारों साल पुरानी व समृद्ध ईरानी सभ्यता के अस्तित्व को धरती से मिटा देने की मनोरोगी अमरीकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप की घोषणा के बाद क्या हुआ? अखबारी दुनिया के लोग कहेंगे कि उसके बाद 15 दिनों का युद्धविराम हुआ... एक ऐसा युद्ध विराम जो कभी विराम नहीं पा सका... अब जिसे दोनों पक्षों ने मृत-सा घोषित कर दिया है. युद्धविराम रणनीति नहीं, आस्था का विषय है... अमरीका–इस्राइल की आस्था युद्ध में है, विराम में नहीं.

लेकिन 7 अप्रैल 2026 की रात में वह भी हुआ जो संभवतः मानवीय सभ्यता के इतिहास में पहले नहीं हुआ था. ट्रंप की कयामत की रात की घोषणा के बाद न ईरान के सत्ताधारियों ने, न ईरान की बलिदानी जनता ने किसी के आगे गुहार लगाई, न हाथ फैलाया, न माफी मांगी. स्त्री-पुरुष-बच्चियां-बच्चे कोई कहीं रोता-कलपता भी नहीं दिखा. पिछले 40 दिनों से वे, खंडहर होते जा रहे अपने देश को सीने से लगाए, आसमान से बरसते विनाश का सामना कर ही रहे थे. वे आक्रमणकारी ट्रंप, गैरतहीन, धूर्त नेतन्याहू और इनके सफरमैना खाड़ी देशों को लगातार हथियारों से जवाब भी दे रहे थे, हालांकि वे जानते थे कि वे अब ज्यादा दिनों तक जवाब देने की हालत में नहीं हैं...

लेकिन 40 दिनों बाद आज, 7 अप्रैल को लड़ाई बदल गई थी. वे युद्ध की नई कुंडली लिखने सड़कों पर निकल आए थे. ईरान के जिन आण्विक संयंत्रों को, नागरिक सुविधा के तंत्र को, पूजा-स्थलों और सांस्कृतिक केंद्रों को बमों से ध्वस्त कर देने की घोषणा ट्रंप ने की थी, हमने देखा कि अपने-अपने ध्वस्त घरों से

निकल-निकल कर ईरानी नागरिक इस सभी स्थलों को घेर कर खड़े होते गए... कोई शोर नहीं, कोई नारेबाजी नहीं; सब एकदम शांत थे. लेकिन हर जगह लोग-ही-लोग थे... सब कह रहे थे हम यहां खुले में खड़े हैं, चलाएं ट्रंप उनके पास जो भी है! ईरान के मशहूर संगीतकार अली घामसारी ने एक संयंत्र के सामने वाली सड़क पर दरी बिछाई और अपना वाद्य बजाने लगे. ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने शांत पर दृढ़ आवाज में बतायाः मरने की तैयारी रखनेवालों की सूची में अब तक 1.40 करोड़ ईरानी नागरिकों ने अपना नाम दर्ज करवाया है और उसमें पहला नाम मेरा है.

यह ईरान के लिए कयामत की रात थी जिसे उसने कमाल की रात में बदल दिया था.

किसी ने देखा या नहीं देखा पता नहीं लेकिन इन बलिदानी ईरानियों की किसी कतार में महात्मा गांधी भी खड़े थे! दुनिया के जिस भी कोने में लोग वीरता से बलिदान देने निकलते हैं, यह 'अधनंगा फकीर' वहां अपनी हाजिरी लगाता ही है. जयप्रकाश ने कभी हंगरी में, कभी तिब्बत में, कभी बांग्लादेश में तो कभी चेकोस्लोवाकिया में इस गांधी को पहचाना था.

गांधी ने कहा था : विवश कायरता से कहीं भला होता है निडर बलिदान! गांधी की अहिंसा का उपहास करने वाले किताबी बुद्धिजीवी व हिंदुत्व की